The Sameeksha Global: A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol. 4, Issue 1 – 2020
ISSN: 2581-401X

भारतीय जीवन बीमा निगम के निधि प्रवाह के स्त्रोत एवं प्रयोग

Sources and uses of fund flow of Life Insurance Corporation of India

Awadhesh Kumar Gupta[1]

[1]*Associate Professor, Faculty of Commerce, P.P.N. (P.G.) College, Kanpur.*

व्यावसायिक संस्था अपने निरन्तर निधि प्रवाह के द्वारा ही अपने व्यावसायिक कार्यकलापों को चालू रख सकती है। निधि, जिसे व्यवसाय में विभिन्न स्त्रोतों से प्राप्त किया जाता है, बदले में विभिन्न प्रयोगों में इस्तेमाल किया जाता है। अधिक से अधिक लाभ हो इसके लिये निधि को सस्ते स्त्रोतों से प्राप्त किया जाता है तथा अधिक लाभ वाले प्रयोगों में रखा जाता है। निगम की "तरल एवं शोध्य" स्थिति वित्तीय प्रबन्धक की बुद्धिमत्ता पर ही निर्भर करती है कि वह किस तरह के स्त्रोतों का चयन करता है। किसी भी व्यापार में संचालन से निधि प्राप्ति सबसे महत्वपूर्ण स्त्रोत है। इसके अतिरिक्त अंशों का निर्गमन, दीर्घकालीन ऋण एवं ऋण पत्रों का निर्गमन, स्थायी सम्पत्तियों एवं विनियोगों का विक्रय आदि निधि प्राप्ति के स्त्रोत है। इसके विपरीत स्थायी सम्पत्तियों का क्रय, कर दायित्वों का भुगतान, दीर्घकालीन ऋणों का पुनः भुगतान तथा ऋण पत्रों का शोधन, लाभांशों का भुगतान आदि निधि के प्रयोग हैं।

भारतीय जीवन बीमा निगम की निधि की स्त्रोत

Sources of funds of LIC

जीवन बीमा निगम अपने निधि को निम्नलिखित स्त्रोतों से प्राप्त करती है-

1. **पूँजी एवं संचय (Capital and Reserve)** - सामान्य रूप से पूंजी से हमारा तात्पर्य वित्तीय साधनों से है, जो किसी व्यवसाय की चल एवं अचल सम्पत्ति को क्रय करने के लिये प्रयोग की जाती है। प्रत्येक उद्योग एवं व्यवसाय के लिये पूँजी जीवनदायिनी शक्ति होती है। संचय से आशय उस राशि से है जो किसी पुस्तक मूल्य को कम करने, किसी ज्ञात सम्भाव्य दायित्वों को पूरा करने अथवा संचिति लाभों के समायोजन करने के लिये किया जाता है। निगम के सम्बन्ध में समस्त पूँजी केन्द्रीय सरकार द्वारा प्रदत्त की जाती है तथा संचय में निगम के सामान्य आरक्षण, सम्पत्ति पुर्नमूल्यन आरक्षण, निवेश आरक्षण आदि को सम्मिलित किया जाता है।

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

2. **जीवन बीमा निधि (Life Insurance Fund)** - यह निगम का सबसे महत्वपूर्ण निधि स्त्रोत है। जीवन बीमा निधि का अर्थ साधारणतया दीर्घकालीन अवधि के लिये प्राप्त की गई राशि से होता है। निगम, जीवन बीमा निधि प्रब्याजि के रूप में गोपलेख को बेचकर प्राप्त करती है। यदि प्रब्याजि की राशि में वृद्धि हो रही है तो इसका अर्थ है कि जीवन बीमा निधि में वृद्धि हो रही है।
3. **अन्य स्त्रोत (Other Sources)** - जीवन बीमा निगम के निधि स्त्रोत में फुटकर लेनदार, बकाया देय, सूचित दावों से सम्बन्धित अनुमानित देयताएं, वार्षिकियां देय और अदत्त, बीमा व्यवसाय चलाने वाले अन्य व्यक्तियों एवं निकायों को देय राशियाँ, नियंत्रित कम्पनियों को देय राशियाँ, कर्मचारी भविष्य तथा पेन्शन निधि के न्यासियों को देय राशियाँ, प्रब्याजि अन्य देय राशियाँ आदि सम्मिलित होती है।

भारतीय जीवन बीमा निगम की निधि के प्रयोग

Uses of funds of LIC

निगम अपनी निधि का प्रयोग निम्नलिखित मदों पर करता है-

1. **विनियोग (Investment)** - लाभ कमाने के उद्देश्य से कोषों का अल्पकालीन या दीर्घकालीन दृष्टि से उपयोग करना विनियोग कहलाता है। निगम का विनियोग निधि की विभिन्न स्त्रोतों से उपलब्धता, स्त्रोतों की प्रकृति, अर्थव्यवस्था की सामान्य दशा एवं सरकारी नीतियों पर निर्भर करता है। चूँकि निगम जैसी संस्था की सहायता इनके विनियोगों पर निर्भर करती है इसलिए जरूरी हो जाता है कि निगम का विनियोग सुदृढ़ विनियोग नीति के सिद्धान्त जैसे सुरक्षा, लाभदायकता, तरलता आदि के अनुसार हो। निगम के विनियोगों को आय उपार्जन के लिये किया जाता है न कि पुनः विक्रय के लिये। इसलिये यह विनियोग अचल सम्पत्तियों का भाग होती है। सामान्यता यह विनियोग विभिन्न प्रकार की प्रतिभूतियों में किया जाता है।
2. **ऋण (Loans)** - निगम अपने कोषों को देश के विभिन्न आर्थिक एवं सामाजिक विकास के लिये ऋण के रूप में प्रदान करता है। इस प्रकार निगम उद्योगों एवं कृषि के लिये बिजली उत्पादन, आवास योजनाओं, शहरी क्षेत्रों और आवासीय नगरों की जल-आपूर्ति, मल और निकास योजनाओं, सड़क परिवहन का विकास, राज्य विद्युत मण्डलों, विभिन्न राज्यों की अन्य समितियों, नगर पालिकाओं तथा अन्य शहरी स्थानीय निकायों आदि को ऋण देकर देश के आर्थिक एवं सामाजिक विकास में सहायता करता है। निगम के ऋणों में वृद्धि निगम के कोषों के प्रयोगों का सूचक होता है।
3. **रोकड़ एवं अन्य प्रयोग (Capital and other uses)**- निगम अपनी निधि का प्रयोग फर्नीचर, कार्यालय साज-सज्जा, लेखन सामग्री, कम्प्यूटर व अन्य महत्वपूर्ण उपकरण, जो निगम के व्यवसाय को चलाने

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

The Sameeksha Global: A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol. 4, Issue 1 – 2020
ISSN: 2581-401X

के लिये आवश्यक होते हैं, उसमें विनियोजित करता है। यदि स्थाई सम्पत्ति में वृद्धि हो रही है तो इसका अर्थ है कि निधि का प्रयोग किया गया है। इसके अतिरिक्त निगम द्वारा निधि का प्रयोग अपने दायित्वों को कम करने में भी किया जाता है। इस प्रकार दायित्व में कमी भी निधि के प्रयोग को बताती है।

निगम की निधि का विश्लेषण

तालिका संख्या - T.1.जीवन बीमा निगम की निधि के स्त्रोत (1991-2000)

(राशि करोड़ों रूपये में)

वर्ष	पूँजी	संचय	जीवन बीमा निधि	अन्य स्त्रोत	योग
1991	5.00	231.07	28439.49	843.42	29518.98
1992	5.00	242.04	34734.57	987.62	35969.32
1993	5.00	252.27	41046.49	117.24	42475.00
1994	5.00	276.37	49718.19	1670.61	51670.17
1995	5.00	282.01	60035.92	2240.24	62563.17
1996	5.00	482.86	72842.38	2620.71	75950.95
1997	5.00	464.64	87925.54	3053.23	91448.41
1998	5.00	586.00	106110.95	3252.42	109954.37
1999	5.00	646.54	127853.60	4259.24	132764.38
2000	5.00	746.85	154888.71	5361.66	161002.22

नोट- सभी आँकड़े भारतीय जीवन बीमा निगम के सम्बन्धित वर्ष की वार्षिक रिपोर्ट से लिये गये है।

तालिका संख्या **(T-1)** जीवन बीमा निगम की ‘‘निधि के स्त्रोतो’’ में पूँजी, संचय, जीवन बीमा निधि और अन्य स्त्रोतों को वर्ष क्रमानुसार स्पष्ट रूप से दिखाया गया है। वर्ष **1991** से लेकर वर्ष **2000** तक पूँजी रूपये **5** करोड़ प्रति वर्ष केन्द्रीय सरकार द्वारा निगम को प्राप्त होती है। वर्ष **1991** से वर्ष **1995** तक संचयों में कोई विशेष वृद्धि नहीं हु यीहै जैसा कि तालिका से स्पष्ट है। वर्ष **1995** में संचय रूपये **282.01** करोड़ है किन्तु वर्ष **1996** से संचयों में वृद्धि हु यी जो कि रु**0 482.86** करोड़ है और यह वृद्धि वर्ष **2000** तक निरन्तर होती रही। वर्ष **2000** में कुल संचय रु**0 885.28** करोड़ है।

निगम की निधि का प्रमुख स्त्रोत जीवन बीमा निधि है। वर्ष **1991** में निधि रु**0 28439.49** करोड़ थी जो कि वर्ष **1994** में रु**0 49718.19** करोड़ वर्ष **1998** में रु**0 106110.95** तथा वर्ष **2000** में रू**0 154888.71** तक पहुंच गयी। जीवन बीमा निधि से होने वाली यह वृद्धि निगम की अच्छी स्थिति की द्योतक है।

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

The Sameeksha Global: A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol. 4, Issue 1 – 2020
ISSN: 2581-401X

निगम की निधि का अन्तिम स्त्रोत अन्य स्त्रोत है। जिसमें फुटकर लेनदार, प्रीमियम, अन्य जमा राशियाँ आदि शामिल है। वर्ष **1991** में निगम की निधि के अन्य स्त्रोत रू**0 843.42** करोड़ थे। वर्ष **1993** तक इनमें सामान्य वृद्धि रही किन्तु वर्ष **1994** से अन्य स्त्रोतों में बढ़ोत्तरी हु यी। वर्ष **1994** में अन्य स्त्रोत रू**0 1670.61** करोड़ थे जो बढ़कर वर्ष **1997** में रू**0 3053.23** करोड़ तथा वर्ष **2000** में रू**0 5361.66** करोड़ हो गये। अब यदि हम निगम के सभी स्त्रोतों को एक साथ देखें तो हम पाते है कि कुल निधि के स्त्रोतों में प्रतिवर्ष बढ़ोत्तरी हु यी।कुल स्त्रोत वर्ष **1991** में रू**0 29518.90** करोड़ वर्ष **1995** में रू**0 62563.17** करोड़ तथा वर्ष **2000** में रू**0 161002.22** करोड़ हो गये। उपरोक्त कुल निधि की तालिका से हम इस निष्कर्ष पर पहुं चते है कि जीवन बीमा निधि की कुल पूजीं5 करोड़ रूपये है तथा इस पूंजी में परिवर्तन न होना निगम की पूंजी पर कम निर्भरता का सूचक है। इसी प्रकार अन्य स्त्रोतों में निधि की राशि बढ़ रही है। जीवन बीमा की राशि में निरन्तर वृद्धि हो रही है जो निगम की बढ़ती हु यी लोकप्रियता एवं कार्यकुशलता का सूचक है।

तालिका संख्या-T-2.जीवन बीमा निगम की निधि के प्रयोग (1991-2000)

(राशि करोड़ों रूपये में)

वर्ष	विनियोग	ऋण	रोकड़	अन्य सम्पत्ति	योग
1991	17862.73	8765.42	889.87	2000.96	29518.98
1992	21214.50	11202.63	1077.12	2475.07	35969.32
1993	25418.23	13143.76	963.97	2949.04	42475.00
1994	32084.26	14631.79	967.19	3986.93	51670.17
1995	40162.29	16175.55	1574.12	4651.21	62563.17
1996	50162.82	18268.18	1494.00	6025.95	75950.95
1997	62231.86	20588.71	1663.91	6963.93	91448.41
1998	76217.69	22885.48	2768.68	8082.52	109954.37
1999	94471.49	26129.31	2606.97	9556.61	132764.38
2000	117517.46	28955.68	2858.39	11670.69	161002.22

नोट- सभी आँकड़े भारतीय जीवन बीमा निगम के सम्बन्धित वर्ष की वार्षिक रिपोर्ट से लिये गये है।

ऊपर हमने निधि के स्त्रोतों का अध्ययन किया अब हम तालिका संख्या (**T-.2**) में निगम की निधि के प्रयोगों को देखेंगे। निगम की निधि के प्रयोगों में विनियोग, ऋण रोकड़ तथा अन्य सम्पत्तियां है। निगम अपनी निधि का अधिकांश भाग विनियोगों में प्रयोग करता है जिससे बीमादारों द्वारा एकत्रित धन का अधिक से अधिक लाभ उन तक पहुं चसके। निगम अपने विनियोगों में प्रतिवर्ष वृद्धि करता आ रहा है। वर्ष 1991 में निगम ने रू0 17862.73 करोड़ वर्ष 1995 में रू0 40162.29 करोड़ वर्ष 2000 में यह राशि रू**0**

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

117517.46 करोड़ तक पहुंचगयी। निगम अपनी निधि को भारत सरकार की प्रतिभूतियों राज्य सरकार की प्रतिभूतियों आदि को खरीदने में प्रयोग करता है।

निगम की निधि के प्रयोग का दूसरा महत्वपूर्ण मद ऋण है। निगम विनियोगों की भांति ऋणों में भी प्रतिवर्ष वृद्धि करता रहा है। तालिका के अनुसार निगम ने वर्ष 1991 में रू0 8765.42 करोड़ वर्ष 1995 में रू0 16175.55 करोड़ तथा वर्ष 2000 में रू0 28955.68 करोड़ ऋण के रूप में दिये। निगम ने यह ऋण राज्य विद्युत बोर्डों, राज्य परिवहन निगम, औद्योगिक इस्टेटों, चीनी सहकारी समितियों आदि को दिये है।

निगम की निधि प्रयोग का तीसरा मद रोकड़ है जिसमें भी निरन्तर वृद्धि होती जा रही है। तालिका के अनुसार वर्ष 1991 में कुल रोकड़ रू0 889.87 करोड़ थी जो वर्ष 2000 में बढ़कर रू0 2858.39 करोड़ हो गई। अन्तिम मद अन्य प्रयोग में एजेन्टों की बाकी, फुटकर देनदार आदि सम्मिलित है। वर्ष 1991 में अन्य स्त्रोत रू0 2000.96 करोड़ थे। जो कि वर्ष 2000 में बढ़कर रू0 11670.69 करोड़ हो गये। अब यदि हम निगम के निधि के सभी प्रयोग को एक साथ देखें तो यह स्पष्ट रूप से दिखायी दे रहा है कि उनमें प्रतिवर्ष बढ़ोत्तरी हो रही है। वर्ष 1991 में निधि के कुल प्रयोग रू0 29518.98 करोड़ थे। वर्ष 1995 में कुल प्रयोग रू0 62563.17 करोड़ तथा वर्ष 2000 में रू0 161002.22 करोड़ हो गये।

वर्ष 2017-18 में निगम की जीवन निधि रू0 2584485 करोड़ रही है। निगम का कुल निवेश में प्रतिभूतियाँ रु0 260947.40 करोड़, ऋण रू0 112392.61 करोड़ तथा अन्य निवेश रू0 21422.35 करोड़ रहा। निगम द्वारा वर्ष 2017-18 में देश के बुनियादी ढाँचे एवं सामाजिक क्षेत्रों में निवेश में भी सराहनीय कार्य किया गया है। निगम ने विद्युत क्षेत्र में रू0 14133.71 करोड़, आवास हेतु रू0 5274.14 करोड़, जलपूर्ति और मल निकास योजनाओं हेतु रू0 29.89 करोड़ तथा अन्य बुनियादी सुविधाओं हेतु रू0 21980.61 करोड़ का निवेश किया है।

हम उपयुक्त निधि के स्त्रोतों एवं प्रयोगों से अध्ययन करने पर इस निष्कर्ष पर पहुँचतेहै कि निधि के स्त्रोतों में वृद्धि का सबसे महत्वपूर्ण साधन ‘‘जीवन बीमा निधि’’ है जिसमें बराबर बढ़ती हु यी राशि निगम के बढ़ते हु ये महत्व का सूचक है। इसी प्रकार निगम की निधि स्त्रोतों के दूसरे मदों में लगातार वृद्धि हो रही है। जीवन बीमा निगम की निधि के प्रयोगों में महत्वपूर्ण मद ‘‘विनियोग’’ रहा है। निगम ने अपनी निधि का विनियोगों में सबसे अधिक प्रयोग किया है। इसके पश्चात् ऋणों का निधि प्रयोगों में दूसरा स्थान रहा है। रोकड़ एवं अन्य सम्पत्तियों की राशि में भी निरन्तर वृद्धि हो रही है। इस वृद्धि का मुख्य कारण निगम की बढ़ती हु ईवित्तीय एवं विनियोग सम्बन्धी आवश्यकताएं है।

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. निगम की वार्षिक रिपोर्ट (वर्ष **1991** से 2000)
2. निगम द्वारा प्रकाशित पत्र-पत्रिकाएं
3. Element of Insurance- Bal Chandra Srivastava (1994).
4. Life Insurance Corporation of India- M.H. Mishra (1991). (A study of working and performance)
5. Insurance Company Investment-Cleton, George (1965).
6. Administrative Financial Management-Bradely Josheph (1974).
7. Risk Management and Insurance- Harrington (2017).
8. Risk and Insurance-Mark Richard (1968).
9. Story of Indian Life Insurance-S.R. Bhave (1970).
10. Elements of Insurance- W.A. Dinsdale (1949).

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.